वैदिक युग में संगीत

- वैदिक युग ही प्राचीनतम युग था
- वैदिक युग ई०पू० 200 से ई०पू० 800 तक माना जाता है
- वैदिक काल में संगीत की दो धारायें थी।
- शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत
- लोक संगीत में आर्यों के युद्ध- विजय से संबंधित कथायें थी।
- संगीत के विकास का प्रमाण ऋग्वेद के श्लोक 5|33|6 में है
- सार्वजनिक संगीत आयोजन और प्रतियोगिता समन के नाम से जाना जाता था
- समन आगे चलकर समज्जा के नाम से जाना जाने लगा।

Scanned with CamScanner

* इस युग में वीणा का प्रयोग होने लगा था।
* चारों वेदों तथा उनके विविध अंगों का विस्तार इसी युग में हुआ।
* सर्वप्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद है।
* गीत के लिए गीर धातु। गाथा, गायन, गीति तथा साम शब्दों का प्रयोग होता था।
* ऋग्वेद की रचनाएँ स्तोत्र कहलाती थी।
* गीत प्रबन्धों को गाथा कहा जाता था।
* (साम) गाथा गाने वाले गायक - गाथिन कहलाते थे।
* अन्त्येष्टि के समय पर साम का गायन होता था।
* ऋग्वेद काल में तीनों प्रकार के वाद्यों (अवनद्ध, सुषिर और तन्तु) का विकास मिलता है जिसे वाणी कहा जाता था।
* अवनद्ध वाद्य - दुन्दुभि, आडंबर, भूमि दुन्दुभि,
  तन्त्र वाद्य - कांड, वीणा, कर्करी वीणा, वाणवीणा
  सुषिर वाद्य - तूणव, नाडि और बाकुर आदि
* मंगल वाद्य के रूप में वीणादि आदि वाद्यों का वादन होता था।
* यजुर्वेद उन मंत्रों का संकलन है जिनका गायन यज्ञादि के अवसर पर कर्मकांड के लिए होता था।
* चतुर्वाद (?) ट्रेन्ड (?) का रूप (शैली) था।

*> यजुर्वेद में चार गायक होते थे।

*> होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रम्हा

*> यज्ञ के कार्यों का संचालन अध्वर्यु नामक ऋत्विज के द्वारा किया जाता था।

*> यजुर्वेद में मंत्रों के अक्षरों की संख्या निश्चित और मंत्र गद्यात्मक होते थे और अध्वर्यु द्वारा गाये जाते थे।

*> इन मंत्रों को उपांशु स्वर में उच्चारित किया जाता था।

*> रथन्तर साम का गायन — वसन्त ऋतु
बृहत्साम " " — ग्रीष्म ऋतु
वैरूप " " — वर्षा "
शाक्वर और रैवत " " — हेमन्त ऋतु में होता था

*> यजुर्वेद में सामगायक का सर्वप्रधान स्थान है

*> यजुर्वेद काल में — वीणा, वाण, तूणव, दुंदुभि, शंख आदि वाद्यों का उल्लेख मिलता है

*> साम — वैदिक संगीत
गाथा, नाराशंसी आदि — लौकिक संगीत थे

*> एक ही साम के विभिन्न खण्डों का गायन उद्गाता तथा उसके सहयोगियों द्वारा किया जाता रहा है

*> वीणा - राज्यलक्ष्मी का अवतार मानी गई।

*> अथर्ववेद के मंत्रों का संबंध जारण- मारण आदि के लिए प्रयोग मंत्रों से है,

*> अथर्ववेद में सामवेद का पूर्ण गौरव गान हुआ

*> अथर्व के अनुसार ऋक्, साम दोनों यज्ञ कर्म के लिए ओज, बल तथा मांगल्य का सम्पादन करने वाला है